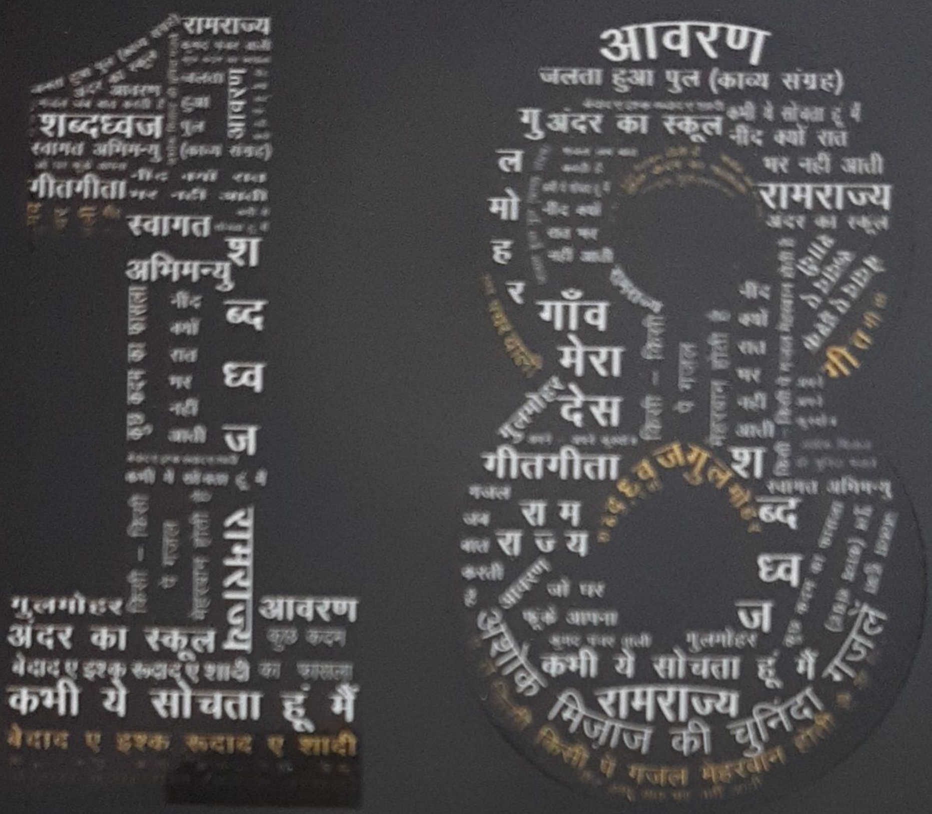

समीक्षाएं

डॉ. सुजाता मिश्र

— ऐसे सभी लेखक, फिल्मकार, संगीतकार, चित्रकार, कलाकार जो अपनी रचनाओं के माध्यम से, अपने विचारों से बार-बार हिंदू धर्म के रीति-रिवाजों का मखौल बनाते है, हिंदू देवी-देवताओं के अश्लील चित्र बनाते हैं, हिंदू पौराणिक कथाओं पर उल-जलूल प्रश्न उठाते हैं क्या यही उनकी रचनाधर्मिता का आधार है? एक विचारधारा विशेष का पोषण करते जाओं, एक धर्म विशेष पर वैचारिक हमला करते जाओ। इसी संदर्भ में लेखक ने इस किताब में भी यह महत्वपूर्ण टिप्पणी की है - ''जब कलाकार सिर्फ कलाकार होकर सृजन करता है तो उसे पूरी आज़ादी मिलनी ही चाहिये, मगर जब कलाकार किसी विचारधारा विशेष के प्रचार और समर्थन हेतु अपनी सृजन शक्ति का प्रयोग करता है तब वह कलाकार नही रहता सिर्फ एक वैचारिक दल का कार्यकर्ता या नेता बनकर रह जाता है। ...

— हम श्रीराम को तो मानते हैं लेकिन उनकी नहीं मानते। हमनें उनके चरणों को तो पकड़ा हुआ है लेकिन उनके आचरणों को ग्रहण करने में हमसे चूक हो जाती है। इसलिए अगर रामराज्य सही अर्थों में स्थापित करना है तो उनके आचरण को अपनाना होगा।

— ऐसा नज़ारा इन दिनों हम तालिबान अधिकृत अफगानिस्तान में देख ही रहे हैं। आश्चर्य यह कि हमारे यहां 1947 में हुए देश विभाजन पर आधारित साहित्य और सिनेमा का भण्डार है किंतु कश्मीरी पंडितों के निर्वासन पर बात करने को भी कोई तैयार नहीं। कैसा होता होगा अपने ही घर से जान बचा के भागना? कैसा होता होगा अपने ही वतन में शरणार्थी बनकर रह जाना? कैसा होता होगा कभी वापस घर लौट न सकने की पीड़ा? दुनिया - जहाँ के झमेलों - प्रपंचों से जूझता हर व्यक्ति शाम होते ही लौट आता है अपने घर। घर तो होता ही इसलिये है न कि वहाँ आकर इंसान भूल जाता है सब चिंतायें, परेशानियां, भय या झिझक। घर ही तो व्यक्ति में अपनेपन और आत्मविश्वास के बीज बोता है।

अमन प्रकाशन
सागर - 470002 (म.प्र.)
मोबाइल : 9826434225

ISBN- 978-81-951010-5-4

₹ 200

डॉ. सुजाता मिश्र

सम्पर्क - sujata0630@gmail-com
drsujatamishra.com

दिल्ली के एक प्रतिष्ठित राजनीतिक - साहित्यिक परिवार में जन्म। दिल्ली से ही विद्यालयीन शिक्षा प्राप्त की, तत्पश्चात देश के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. हिंदी ऑनर्स में स्नातक तथा फिर दिल्ली विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में एम.ए. की शिक्षा पूर्ण कर, वर्ष 2008 भोपाल के बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध आलोचक आचार्य विनय मोहन शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध कार्य किया, आचार्य विनय मोहन शर्मा के साहित्यिक और निजी जीवन पर आधारित अभी तक का एकमात्र शोध कार्य है।

पूर्व हिंदी शिक्षिका - सिंधिया कन्या विद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश

पूर्व सहायक प्राध्यापक - बीटी इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन सागर, मध्यप्रदेश

सम्प्रति - डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर में असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि विद्वान) अपनी सेवायें दे रही हैं।

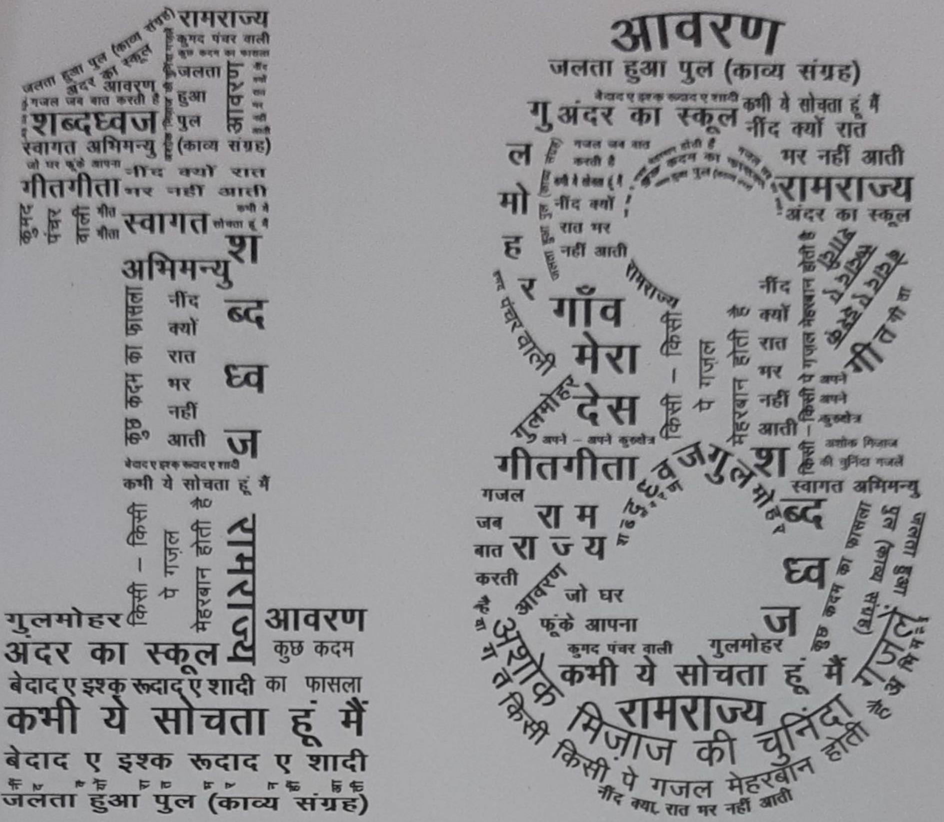

समीक्षाएं

लेखक

डॉ. सुजाता मिश्र

अमन प्रकाशन, सागर (म.प्र.)

18 समीक्षायें

लेखक
डॉ. सुजाता मिश्र

प्रथम संस्करण : 2021
©लेखक

ISBN : 978-81-951010-5-4

मूल्य : 200/-

प्रकाशक - अमन प्रकाशन
डॉ. पन्नालाल साहित्याचार्य मार्ग
जवाहरगंज वार्ड, सागर (म.प्र.) 470002
मो. 9826434225
Email - ajayactive69@gmail.com

प्रिंटर्स - विकास ऑफसेट, भोपाल

कवर पृष्ठ परिकल्पना - माधव चंद्र
डिजायन - राजीव केशरवानी

अनुक्रम

1. आवरण - सत्य पर पड़ा झूठ का पर्दा 11
   - प्रो. एस.एल. भैरप्पा
2. रामराज्य - जा की रही भावना जैसी। प्रभु मूरत देखी तिन तैसी 21
   - आशुतोष राणा
3. अपने-अपने कुरुक्षेत्र - सबका अपना किस्सा है 29
   - मीनाक्षी नटराजन
4. अंदर का स्कूल - जीवन एक पाठशाला 37
   - डॉ. मनोहर अगनानी
5. गाँव मेरा देश - मन में बसा गाँव 42
   - श्रीभगवान सिंह
6. नींद क्यों रात भर नहीं आती - जीवन की आपाधापी में 49
   - सूर्यनाथ सिंह
7. जो घर फूंके आपना - एक पायलट की कहानी 56
   - अरुणेंद्र नाथ वर्मा
8. स्वागत अभिमन्यु - कहानियाँ संघर्ष की 65
   - ओम भारती
9. बेदाद ए इश्क़ रूदाद ए शादी - ये इश्क नहीं आसां 71
   - नीलिमा चौहान एवं अशोक कुमार पाण्डेय
10. कुमद पंचर वाली - उदात्त प्रेम 79
    - राजकुमार तिवारी
11. जलता हुआ पुल (काव्य संग्रह) - निर्वासन की पीड़ा 86
    - अग्निशेखर

12. कभी ये सोचता हूँ मैं - बात जो कही नहीं गयी 95
- आनंद कुमार शर्मा

13. किसी-किसी पे ग़ज़ल मेहरबान होती है / अशोक 'मिज़ाज' की चुनिंदा गज़लें - समुदंरो का मिज़ाज 101
- अशोक 'मिज़ाज' बद्र

14. गीतगीता - अनुवाद-भाषा और भावों का 112
- डॉ. मनीष चन्द्र झा

15. कुछ कदम का फ़ासला - मनोभावों की अभिव्यक्ति 116
- वीरेन्द्र प्रधान

16. शब्दध्वज विशेषांक - स्त्री मन के विभिन्न आयाम 122
- डॉ. प्रतिभा सिंह परमार राठौर

17. गुलमोहर - जीवन की कविताएँ 127
- चंचला दवे

18. ग़ज़ल जब बात करती है 132
- डॉ. वर्षा सिंह